Result Mitra Daily Magazine

पशुधन जनगणना–2024 की शुरुआत

➢ हालिया संदर्भ :

- हाल ही में केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री राजीव रंजन सिंह ने गुरुवार, 24 अक्टूबर को नई दिल्ली में 21वीं पशुधन (Livestock) जनगणना का शुभारंभ किया।

➢ पशुधन जनगणना क्या है ?

- हर 5 वर्ष में आयोजित होने वाली पशुधन जनगणना में देश के पालतू जानवरों, मुर्गी पालन और आवारा जानवरों की संख्या की गणना की जाती है।
- पशुधन जनगणना में जानवरों की प्रजाति, नस्ल, उम्र, लिंग और स्वामित्व की स्थिति के बारे में भी जानकारी ली जाती है।
- भारत में पहली पशुधन जनगणना वर्ष 1919 में शुरू की गई थी।
- आखिरी पशुधन जनगणना वर्ष 2019 में आयोजित की गई थी।
- हालिया शुरू की गई 21वीं पशुधन जनगणना अक्टूबर 2024 से फरवरी 2025 तक जारी रहेगी।
- पशुधन जनगणना के अंतर्गत अगले कुछ महीने में लगभग 87,000 से अधिक गणनाकर पशुओं की जानकारी इकट्ठा करने के लिए प्रत्येक घर, अपार्टमेंट, गौशालाओं (मवेशी शेड) डेयरी फार्म, पोल्ट्री फार्म, पशु चिकित्सा महाविद्यालय सहित रक्षा प्रतिष्ठानों जैसे संस्थाओं का दौरा करेंगे।
- भारत के इस पशुधन जनगणना में लगभग 30 करोड़ परिवारों को शामिल किए जाने की संभावना है।

➢ 21वीं पशुधन जनगणना में किन जानवरों की गिनती की जाएगी ?

- पशुपालन एवं डेयरी विभाग के अनुसार 21वीं जनगणना में 16 पशु प्रजातियों की जानकारी इकट्ठा की जाएगी।
- इन सोलह पशुओं की प्रजाति में मवेशी, भैंस, मिथुन, याक, भेड़, बकरी, सूअर, ऊंट, घोड़ा, टट्टू, खच्चर, गधा, कुत्ता, खरगोश और हाथी शामिल है।
- इन 16 पशुओं की प्रजाति की 219 स्वदेशी नस्लों की जानकारी राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (NBAGR, National Bureau of Animal Genetic Resources) एकत्र करेगी।
- इसके अलावा इस जनगणना में मुर्गी, बत्तख, तुर्की, गीज, बटेर, शुतुरमुर्ग और एमु जैसी पोल्ट्री पक्षियों की भी गिनती की जाएगी।

➢ पशुधन जनगणना का उद्देश्य क्या है ?

- पशुधन ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- विशेष रूप से कृषि क्षेत्र में मुर्गी पालन और पशुपालन सकल मूल्य वर्धित (GVA, Gross Value Added) में लगभग 30% का योगदान देता है।
- कुल मिलाकर भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन क्षेत्र का GVA लगभग 4.7% है।
- सकल मूल्य वर्धित (GVA) का तात्पर्य किसी क्षेत्र के कुल उत्पादन में मध्यवर्ती खपत की लागत को घटाकर निकाले जाने वाले लाभ से है।
- पशुधन जनगणना के आंकड़ों का उपयोग पशुधन क्षेत्र में GVA का अनुमान लगाने के लिए भी किया जाएगा।
- पशुधन जनगणना से प्राप्त आंकड़े के आधार पर पशुओं से संबंधित नीतियां बनाने और उसे लागू करने में मदद मिलेगी।
- पशुधन जनगणना के आंकड़े संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDG, Sustainable Development Goals) को प्राप्त करने की प्रगति को ट्रैक करने के लिए भी महत्वपूर्ण साबित होगी।
- पशुधन जनगणना मुख्य रूप से पशुओं के भोजन और पोषण में अनुवांशिक विविधता एवं स्थानीय पशुधन नस्लों का प्रतिशत जो विलुप्त होने के कगार पर है, से संबंधित डेटा प्रदान करेगा।

➢ 21वीं पशुधन जनगणना पिछली पशुधन जनगणना से किस प्रकार भिन्न है :

- 21वीं पशुधन जनगणना 2019 की पिछली पशुधन जनगणना की तुलना में पूरी तरह डिजिटल होगी।

Result Mitra TM

- 21वीं पशुधन जनगणना में मोबाइल एप्लीकेशन के माध्यम से ऑनलाइन डेटा संग्रह, डिजिटल डैशबोर्ड के माध्यम से विभिन्न स्तरों की निगरानी सहित डेटा संग्रह के स्थान के अक्षांश और देशांतर को भी कैप्चर किया जाएगा।
- 21वीं पशुधन जनगणना पहली बार पशुधन क्षेत्र में चरवाहों के योगदान एवं उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर भी डेटा एकत्र करेगी।
- इस जनगणना में पशुधन क्षेत्र पर आधारित परिवारों के अनुपात का भी पता लगाया जाएगा।

➢ 2019 के पशुधन जनगणना के आंकड़े :

- भारत में कुल पशुधन की जनसंख्या - 535.78 मिलियन
- मवेशी – 192.1 मिलियन
- बकरियां –148.88 मिलियन
- भैंसे – 109.85 मिलियन
- भेड़ें – 74.26 मिलियन
- सूअर – 9.06 मिलियन

Result Mitra